IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 10, May 2025
Impact Factor: 7.67

उत्तराखंड का पर्वतीय प्रवास और जलवायु परिवर्तन: एक समाजिक एवं पर्यावरणीय अध्ययन

दिनेश कुमार[1], **डॉ.अर्पणा जोशी**[2]
शोधार्थी, विषय-समाजशास्त्र, महात्मा ज्योतिबा फूले रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (उत्तर प्रदेश)[1]
शोध निर्देशिका, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, गोकुलदास हिंदू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद[2]

सारांश: देवभूमि उत्तराखंड हिमालय की गोद में बसा एक प्रमुख पर्वतीय राज्य है, जिसकी भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान अत्यंत विशिष्ट है। पिछले कुछ दशकों से यहां के पर्वतीय क्षेत्रों से होने वाला प्रवास एक गंभीर सामाजिक- आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौती के रूप में उभरा है। विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन ने इस प्रवृत्ति को और अधिक बल दिया है।

पर्वतीय प्रवास के पीछे कई कारण है, सीमित कृषि योग्य भूमि, रोजगार के अवसरों की कमी, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव तथा प्राकृति आपदाओं की बढ़ती घटनाएं। जलवायु परिवर्तन में इन समस्याओं को और तीव्रता से हवा देने का काम किया है। तापमान में वृद्धि, वर्षा चक्र में असमानता, ग्लेशियरों का तेजी से पिघलने, भूस्खलन, बादल फटने जैसी घटनाओं ने पर्वतीय जीवन को असुरक्षित और अस्थिर बना दिया है। परिणाम स्वरूप युवा पीढ़ी रोजगार और बेहतर जीवन स्तर की तलाश में मैदानी क्षेत्र या महानगरों की ओर पलायन कर रही है, जिससे गांव में मुख्यतः बुजुर्ग और महिलाएं ही रह जाती है। यह शोध विभिन्न सरकारी रिपोर्ट जनगणना आंकड़ों और पूर्ववर्ती शोधों के आधार पर यह स्पष्ट करता है, कि जलवायु परिवर्तन न केवल कृषि उत्पादन को प्रभावित करता है बल्कि जल स्रोतों के सूखनें, मिट्टी के कटाव और पारंपरिक पशुपालन व्यवस्था के विघटन, अत्यधिक वर्षा और बादलों के फटने, पहाड़ों के खिसकने और आपदाओं का कारण भी बनता है। ये सभी कारण आजीविका संकट को जन्म देते हैं जो अंततः पलायन को बढ़ावा देते हैं। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि पलायन और जलवायु परिवर्तन एक चक्रीय स्थिति को जन्म देते हैं। जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन ग्रामीण आजीविका को कमजोर करता है, पलायन बढ़ता है और जनसंख्या घटने से स्थानीय अर्थव्यवस्था और सामुदायिक संरचना और भी कमजोर हो जाती है, इससे पारंपरिक ज्ञान संस्कृति धरोहर और सामाजिक एकजुटता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। शोध पत्र इस और भी ध्यान आकर्षित करता है कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 10, May 2025
Impact Factor: 7.67

और प्रवास की गति को नियंत्रित करने के लिए बहुआयामी नीति हस्तक्षेप आवश्यक है। इसमें सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना, जल संरक्षण, स्थानीय रोजगार सृजन, पर्यटन के पर्यावरण संवेदी मॉडल और आपदा प्रबंधन क्षमता की मजबूती आदि शामिल है। अतः शोध इस निष्कर्ष पर पहुंचा है, कि उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र के सतत विकास के लिए जलवायु परिवर्तन, अनुकूलन रणनीति को प्रवास नीति के साथ जोड़कर लागू करना होगा।

मुख्य शब्द: उत्तराखंड, पर्वतीय प्रवास, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदा, आजीविका संकट।

प्रस्तावना:

उत्तराखंड हिमालय की ऊंचाइयों पर स्थित एक सुंदर, समृद्ध और जैव विविधता से भरपूर राज्य है। यह राज्य है दो प्रमुख भौगोलिक क्षेत्रों गढ़वाल और कुमाऊं में विभाजित है। इस राज्य का अधिकांश क्षेत्र पर्वतीय है। यहां के गांव सदियों से आत्मनिर्भर कृषि, पशुपालन और सामुदायिक सहयोग पर आधारित जीवन शैली का पालन करते हैं। लेकिन कुछ दशकों से उत्तराखंड से पर्वतीय प्रवास की समस्या उभर कर आयी है, जिसे राज्य सरकार की नींद उड़ा दी है। इस प्रवास की जड़े जहां रोजगार, स्वास्थ्य और शिक्षा में दिखाई देती है वही जलवायु परिवर्तन भी इसके लिए कम जिम्मेदार नहीं हैं। जलवायु परिवर्तन का अर्थ है पृथ्वी के मौसम और जलवायु प्रणाली में दीर्घकालिक बदलाव जो मुख्यतः मानव जनित ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के कारण हो रहा है। उत्तराखंड जैसे संवेदनशील पर्वतीय राज्य में इसका प्रभाव अत्यधिक दिखाई देता है। तापमान वृद्धि, बर्षा चक्र का असंतुलन, हिमनदों का तेजी से पिघलना और प्राकृतिक आपदाओं (जैसे भूस्खलन, बादल फटना, बाढ़) की आवृत्ति में वृद्धि इन बदलावों ने यहां की पारंपरिक आजीविका प्रणाली को अस्थिर बना दिया है, जिससे ग्रामीण समुदायों के लिए जीविका बनाए रखना कठिन हो गया है। उत्तराखंड में प्रवास की यह समस्या ग्रामीण पलायन और जलवायु परिवर्तन के परस्पर संबंध का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। अध्ययनों और सरकारी रिपोर्ट से यह स्पष्ट होता है कि पर्वतीय प्रवास और जलवायु परिवर्तन एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। जलवायु परिवर्तन से ग्रामीण संसाधन कमजोर होते हैं, जिससे पलायन की प्रवृत्ति बढ़ती है, साथ ही प्रवास से ग्रामीण क्षेत्र की आर्थिक और सामाजिक शक्ति घटने लगती है परिणाम स्वरुप जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का सामना करने की क्षमता और भी काम हो जाती है। यह एक प्रकार का विकेट चक्र बन जाता है, इस चक्र से निकलना बहुत मुश्किल कार्य होता है। इसी चक्र में उत्तराखंड का पर्वतीय प्रवास फसता दिखाई देता है। शोध की दृष्टि से यह विषय अत्यंत प्रासंगिक है। एक ओर जलवायु परिवर्तन वैश्विक चिंता का विषय बना हुआ है, दूसरी ओर प्रवास एक गंभीर सामाजिक चुनौती के रूप में उभरा है। उत्तराखंड जैसे पहाड़ी राज्य में इन दोनों का मेल एक विशिष्ट अध्ययन का अवसर प्रदान करता है, जिसमें हम देख सकते हैं कि कैसे पर्यावरणीय बदलाव सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित करता है। दूसरी और सामाजिक बदलाव पर्यावरणीय चुनौतियों को बढ़ावा दे सकते हैं। इस शोध का महत्व इस दृष्टिकोण से और भी बढ़ जाता है जब हम यह समझने का प्रयास करते हैं, कि जलवायू परिवर्तन किस प्रकार प्रवास को प्रभावित करता है, और प्रवास किस प्रकार जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को और गंभीर बना देता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 10, May 2025 Impact Factor: 7.67

यह ज्ञात कर हम अधिक प्रभावी और लक्षित नीतियां बना सकते हैं इसमें सतत कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देना, जल संरक्षण और आपदा प्रबंधन योजनाओं को मजबूत करना, स्थानीय रोजगार के अवसर पैदा करना और जलवायु प्रतिरोधी अवसंरचना का विकास शामिल हो सकता है।

समस्या की पृष्ठभूमि:

यद्यपि उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य, जैव विविधता और संस्कृत समृद्धि से भरपूर है, लेकिन यहां का भौगोलिक परिदृश्य कठोर और चुनौती पूर्ण है। संकरी घाटी, ऊंची- नीची पहाड़ी, सीमित कृषि योग्य भूमि और आवागमन के कठिन साधन सदियों से यहां के जीवन को प्रभावित करते आए हैं । लेकिन कभी ऐसा जटिल समय नहीं रहा जैसा कि आज है, लोग अपना घर, संस्कृति, परिवार जनों को छोड़कर पलायन करने को मजबूर है। पारंपरिक रूप से लोग आत्मनिर्भर खेती, वनों पर आधारित संसाधन, पशुपालन और स्थानीय हस्तशिल्प के माध्यम से जीवन यापन करते रहे हैं। सामुदायिक सहयोग, पारंपरिक ज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग यहां की जीवन शैली की विशेषता रही है।

1- **प्रवास का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य:-** उत्तराखंड में प्रवास कोई नई घटना नहीं है। ऐतिहासिक रूप से यहां के लोग सैनिक, मजदूर, शिक्षक या छोटे व्यापारी के रूप में अन्य क्षेत्रों में जाते रहे हैं, लेकिन यह प्रवास मौसमी या आंशिक होता था। और अधिकांश लोग अपने गांव से जुड़े रहते थे **1960** और **1970** के दशक में सड़क, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार के बाद भी पहाड़ों में रोजगार और उद्योग के अवसर नहीं बढ़ पाए। निष्कर्ष स्थाई प्रवास की प्रकृति धीरे-धीरे बढ़ने लगी।

2- **आर्थिक कारण:-** पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि मुख्यतः वर्षा पर आधारित है। जोत भूमि का आकर भी बहुत छोटा है, यहां सीढ़ीदार खेती होती है। जलवायु परिवर्तन से पहले भी कृषि उत्पादन सीमित ही था। जलवायु परिवर्तन के बाद तो पहाड़ों पर रहना मुश्किल हो गया है, आए दिन कोई न कोई प्राकृतिक आपदा आती ही रहती है। परिणाम स्वरूप युवा पीढ़ी का मैदानी क्षेत्रों और शहरों की ओर पलायन।

3- **सामाजिक कारण:-** शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव भी प्रवास को बढ़ाने का प्रमुख कारण है। पहाड़ों में उच्च शिक्षा संस्थान न के बराबर हैं, युवा पढ़ाई के लिए बाहर जाते हैं और रोजगार के लिए वहीं बस जाते हैं। जलवायु परिवर्तन और भौगोलिक परिस्थितियों ने जीवन यापन और बुनियादी ढांचे को कमजोर किया है। जिसका परिणाम प्रवास के रूप में दिखाएं पड़ता है।

4- **पर्यावरणीय कारण और जलवायु परिवर्तन का प्रभाव:-** हाल के वर्षों में जलवायु परिवर्तन इस पलायन समस्या का एक प्रमुख उत्प्रेरक बनकर उभरा है। उत्तराखंड का भौगोलिक परिदृश्य जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है।

- **तापमान में वृद्धि**:- हिमालय क्षेत्र में तापमान वृद्धि के कारण बर्फबारी का समय और मात्र दोनों प्रभावित हो रहे हैं।
- **वर्षा चक्र में बदला:-** वर्षा का असमय होना बढ़ और भू-स्खलन जैसी समस्याओं को जन्म देता है। साथ ही फसलों का उत्पादन भी घट रहा है।
- **हिमनदों का पिघलना:-** ग्लेशियरों के तीव्र गति से पिघलने से जल स्रोतों की स्थिरता प्रभावित हो रही है, जिसे पीने के पानी और सिंचाई की समस्या बढ़ रही है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 10, May 2025 Impact Factor: 7.67

- **प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि:-** भू-स्खलन ,बादलों का फटना, अचानक बाढ़ और भूकंप की घटना बढ़ रही है, जिससे लोगों के जान माल का नुकसान हो रहा है।

5- **जनसांख्यिकीय असंतुलनऔर सामाजिक प्रवास:-** पलायन के कारण पर्वतीय गांव के गांव खाली होते जा रहे हैं **2011** की जनगणना के अनुसार **1034** गांव खाली हो चुके है। जिन्हें "घोस्ट विलेज" कहा जाता है। पलायन के बाद गांव में केवल महिलाएं और बुजुर्ग ही रह गए हैं, इससे न केवल श्रम शक्ति में कमी आई है, बल्कि सामाजिक संरचना पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक परंपराओं का क्षरण भी हुआ है।

6- **नीति स्तरीय कमियां:-** सरकार ने पर्वतीय क्षेत्र के लिए कई योजना शुरू की है, लेकिन अक्सर यह योजनाएं स्थानीय आवश्यकताओं और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को पर्याप्त रूप से ध्यान में रखकर नहीं की गई है। पर्यटन को बढ़ाने के प्रयास कई बार अनियोजित और पर्यावरण के लिए हानिकारक साबित होते हैं।

7- **प्रवास और जलवायु परिवर्तन का पारस्परिक संबंध:-** जलवायु परिवर्तन और प्रवास के बीच गहरा संबंध है। जलवायु परिवर्तन ग्रामीण संसाधनों को कमजोर करता है, और यह प्रवास के लिए उत्प्रेरक का काम करता है। दूसरी और प्रवास के कारण गांव की जनसंख्या कम हो जाती है, तो स्थानीय अर्थव्यवस्था और सामाजिक तंत्र कमजोर हो जाता है। जिससे जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और संवेदनशील हो जाते है। इस प्रकार दोनों समस्याएं एक दूसरे को बढ़ाती है।

8- **समस्या की गंभीरता और अध्ययन की आवश्यकता:-** उत्तराखंड में पर्वतीय प्रवास संस्कृति और जनसंख्यिकीय पहलू जुड़े हुए हैं। जलवायु परिवर्तन के बढ़ते प्रभावों के बीच यदि प्रवास की यह गति जारी रही तो न केवल पर्वतीय गांव का अस्तित्व खतरे में पड़ेगा, बल्कि पूरे राज्य की सांस्कृतिक और पारिस्थितिकी पहचान को भी खतरा होगा।

अध्ययन का उद्देश्य:

इस शोध पत्र का उद्देश्य उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में हो रहे प्रवास और जलवायु परिवर्तन के बीच पारस्परिक संबंध को समझना है शोध का लक्ष्य यह विश्लेषण करना है, कि जलवायु परिवर्तन किस प्रकार स्थानीय आजीविका, कृषि, जल-स्रोत और सामाजिक संरचना को प्रभावित कर रहा है। इसके परिणाम स्वरुप प्रवास की प्रवृत्ति कैसे बढ़ रही है साथ ही प्रवास के कारण उत्पन्न जनसंख्या की संस्कृति और आर्थिक परिवर्तन का मूल्यांकन करना तथा नीति निर्माताओं के लिए ऐसे सुझाव देना है, जो इन चुनौतियों का स्थाई और समावेशी समाधान प्रदान कर सके।

जलवायु परिवर्तन और उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र:

देवभूमि उत्तराखंड एक पर्वतीय राज्य है जिसकी लगभग **86%** भूमि पर्वतीय है। यह राज्य जलवायु और पारिस्थितिकी की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील है। यहां के पर्वतीय पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन वैश्विक और स्थानीय जलवायु पैटर्न पर निर्भर करता है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे है, जिसका प्रभाव यहां के पर्यावरण, आजीविका और सामाजिक जीवन पर पड़ रहा है। जिसका परिणाम पलायन के रूप में दिखाई दे रहा है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 10, May 2025
Impact Factor: 7.67

1- **जलवायु परिवर्तन के भौगोलिक और पर्यावरणीय प्रभाव**

- **तापमान में वृद्धि:-** उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र में औसत वार्षिक तापमान में लगातार वृद्धि दर्ज की जा रही है। IPCC और राज्य जलवायु परिवर्तन केंद्र की रिपोर्ट के अनुसार पिछले 50 वर्षों में तापमान में लगभग 0.8°C से 1°C की वृद्धि हुई है। इसका असर पारंपरिक फसल चक्र, बर्फबारी के पैटर्न और वनों की संरचना पर पड़ रहा है।
- **वर्षा चक्र में है संतुलन:-** पहले मानसून के दौरान वर्षा अपेक्षाकृत संतुलित होती थी, लेकिन अब वर्षा का पैटर्न अनियमित हो गया है। कभी बहुत कम वर्षा होती है तो कभी बादल फटने से अत्यधिक वर्षा हो जाती है, जिससे बाढ़ और भू-स्खलन की घटना बढ़ रही है।
- **हिमनदों का पिघलना:-** उत्तराखंड की कई हिमनद जैसे:- गंगोत्री, पिंडारी और मिलम ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। गंगोत्री ग्लेशियर प्रतिवर्ष लगभग 15 से 20 मीटर पीछे हट रहा है। इसका सीधा प्रभाव गंगा यमुना और अन्य नदियों के जल स्तर पर पड़ रहा है। जिसे सिंचाई और पेयजल संकट उत्पन्न हो गया है।
- **प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि:-** जलवायु परिवर्तन के कारण भू-स्खलन, बादल फटना, अचानक बाढ़ और सूखे जैसी घटनाओं की आवृत्ति और तीव्रता दोनों में वृद्धि हुई है। 2013 की केदारनाथ आपदा इसका प्रमुख प्रमाण है, जिसने न केवल जान-माल का भारी नुकसान किया, बल्कि प्रवास की दर को भी गति दी है।

2- **सामाजिक आर्थिक परिणाम**

- **कृषि पर प्रभाव:-** उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र की अधिकांश आबादी कृषि और पशुपालन पर निर्भर है। जलवायु परिवर्तन के कारण पारंपरिक फसलों जैसे गेहूं, जौ और मंडुआ की पैदावार घट रही है। असामान्य वर्षा और सुखे के कारण किसान नगदी फसलों की ओर रुक कर रहे हैं, जिससे खाद्य सुरक्षा को संकट हो गया है।
- **जल स्रोतों का सूखना:-** पर्वतीय क्षेत्रों में छोटे-छोटे झरने स्थानीय जल स्रोत जीवन का आधार रहे हैं, लेकिन ताप में वृद्धि और वर्षा चक्र के बदलाव से यह जल स्रोत सूख गई है, जिससे सिंचाई और पीने के पानी की समस्या हो गई है।
- **स्वास्थ्य पर प्रभाव:-** जलवायु परिवर्तन के कारण नई-नई बीमारियों और मौसमी रोगों का खतरा बढ़ गया है। पर्वतीय क्षेत्रों में पहले से ही डॉक्टर अस्पतालों और दवाइयां की कमी थी। इस समस्या के कारण युवा मैदानी क्षेत्रों और शहरों की ओर पलायन करने लगा है।
- **पर्यटन पर असर:-** पर्यटन उत्तराखंड की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन अस्थिर मौसम, आपदाओं और पर्यावरणीय क्षरण के कारण पर्यटन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है , दूसरी ओर नियोजित पर्यटन से पर्यावरणीय दबाव भी बढ़ रहा है।

3- **प्रवास को प्रेरित करने वाले कारक के रूप में जलवायु परिवर्तन:-** जलवायु परिवर्तन का प्रभाव केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक संरचना को भी गहराई से प्रभावित करता है। कृषि उत्पादन घटने, जल संकट बढ़ने और आपदा जोखिम के कारण युवा पीढ़ी गांव छोड़कर मैदानी क्षेत्रों , शहरों और अन्य राज्यों में बेहतर रोजगार की तलाश में जा रहे है। यह पलायन पहले अस्थाई था, किंतु अब स्थाई हो गया है। परिणाम स्वरुप अनेक गांव "घोस्ट विलेज" हो गए हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 10, May 2025 Impact Factor: 7.67

4- **पारंपरिक ज्ञान और अनुकूलन की चुनौतियां:-** उत्तराखंड के ग्रामीण समाज के पास जलवायु अनुकूलन के कई पारंपरिक तरीके हैं। जैसे: मिश्रित खेती, वर्षा जल संचय और सामुदायिक वनों का संरक्षण लेकिन प्रवास के कारण यह पारंपरिक ज्ञान धीरे-धीरे लुप्त होता जा रहा है।

पर्वतीय प्रवास के सामाजिक आर्थिक कारण:

उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्र से प्रवास केवल आर्थिक आवश्यकता या पर्यावरणीय दबाव का परिणाम नहीं है, बल्कि इसके गहरे सामाजिक कारण भी है। यह कारण जीवन की गुणवत्ता, अवसर की उपलब्धता, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक मान सम्मान से जुड़े हुए हैं।

1- **शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों की कमी:-** पर्वतीय क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण विद्यालय, कॉलेज और प्रोफेशनल कोर्स उपलब्ध न होने से युवा बेहतर शिक्षा के लिए मैदानों एवं शहरों की ओर रुख कर रहे हैं। शिक्षा पूर्ण करने के बाद भी अपने क्षेत्र में रोजगार नहीं मिल पाता परिणाम स्वरुप वे मैदानी क्षेत्रों ,शहरों या अन्य राज्यों में रोजगार तलाश का लेते हैं और स्थाई पलायन कर जाते हैं।

2- **स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव:-** उत्तराखंड के पर्वतीय गांव से पलायन का एक प्रमुख कारण स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव भी है दुर्गम भौगोलिक स्थिति के कारण स्वास्थ्य सेवाएं अपर्याप्त है। प्राथमिक स्वास्थ्य केदो में विशेषज्ञ डॉक्टर और आधुनिक उपकरणों की भारी कमी है।

3- **सामाजिक प्रतिष्ठा और जीवन स्तर में सुधार की आकांक्षा:-** युवा सामाजिक प्रतिष्ठा और बेहतर जीवन स्तर की तलाश में अपना गांव छोड़कर शहरी क्षेत्रों में बस जाते हैं। शेरों की चकाचौंध उन्हें स्थाई प्रवास करने को प्रेरित करती है।

4- **महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण:-** पहाड़ों का जीवन महिलाओं के लिए पहाड़ जैसा होता है। शहरी क्षेत्र में महिलाओं को अधिक अवसर और स्वतंत्रता मिलती है, जिसके कारण परिवार अपनी बेटियों की शिक्षा और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पलायन कर लेते हैं।

5- **सामाजिक अलगाव और पीढ़ीगत परिवर्तन:-** नई पीढ़ी कृषि या पारंपरिक व्यवसाय को अपने में रुचि नहीं रखती और आधुनिक जीवन शैली अपनाना चाहती है, जो उन्हे प्रवास के लिए प्रेरित करते हैं।

6- **सांस्कृतिक और विवाह संबंधी कारण:-** विवाह के बाद परिवार शहरों में जाकर बस जाते हैं, विशेष कर जब जीवन साथी शहरी क्षेत्र का निवासी हो। दूसरी ओर गांव से शहर की ओर जाना संस्कृतिक प्रगति के रूप में देखा जाता है जिसके कारण युवा पलायन कर रहे हैं।

जलवायु परिवर्तन और प्रवास का पारस्परिक संबंध:

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक समस्या है लेकिन इसका प्रभाव स्थानीय समुदायों और विशेष कर परिवारों पर गहराई से पड़ा है। परिवार जो समाज की सबसे छोटी इकाई है, जलवायु परिवर्तन का प्रभाव इस पर सबसे पहले पड़ता है, क्योंकि जलवायु परिवर्तन के परिणाम स्वरुप आर्थिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्तर प्रभावित होता है।

1- **आजीविका और आय पर प्रभाव:-** जलवायु परिवर्तन के कारण अनियमित वर्षा, सुखा, ओलावृष्टि, बादल का फटना, बाढ़, तापमान में वृद्धि जैसी घटनाएं फसलों के उत्पादन को घटा देती है इससे परिवार कि आय घटती है, और आर्थिक सुरक्षा बढ़ती है। ऐसी स्थिति में परिवार के युवा बेहतर रोजगार की तलाश में पलायन कर जाते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 10, May 2025 Impact Factor: 7.67

2- **पारिवारिक संरचना और प्रवास:-** जब जलवायु परिवर्तन के कारण आजीविका संकट बढ़ता है तो प्रवास तेज हो जाता है। युवाओं के चले जाने पर परिवार में महिलाएं और बुजुर्ग रह जाते हैं। इससे परिवार की संरचना बदल जाती है, परिणाम स्वरुप महिलाओं पर आर्थिक व सामाजिक दबाव बढ़ता है।

3- **स्वास्थ्य और पोषण पर असर:-** जलवायु परिवर्तन के कारण न केवल कृषि आय घटती है, बल्कि परिवार का पोषण स्तर भी गिर जाता है। पोषण की कमी मौसमी बीमारियों को बढ़ा देती है। स्वच्छ जल की कमी और स्वास्थ्य सेवाओं तक कठिन पहुंच से बच्चों में कुपोषण और बुजुर्गों में बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।।

4- **पारिवारिक संबंध और मनोवैज्ञानिक प्रभाव:-** प्रवास से उत्पन्न दूरी और आर्थिक संकट से परिवार में तनाव बढ़ता है। अलगाव, अकेलापन और अनिश्चित परिवार के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। प्राकृतिक आपदाओं के कारण परिवार में भय और असुरक्षा ओर गहरी हो जाती है।

5- **अनुकूलन और सामूहिक प्रयास:-** परिवार न केवल जलवायु परिवर्तन से प्रभावित होते हैं, बल्कि वे इसके समाधान में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका भी निभा सकते हैं। लेकिन युवाओं के प्रवास ने इस खाई को और बढ़ा दिया है।

निष्कर्ष:

उत्तराखंड का पर्वतीय प्रवास और जलवायु परिवर्तन समाजशास्त्रीय एवं पर्यावरणीय दृष्टिकोण से एक जटिल एवं गहन अध्ययन का विषय है। इस क्षेत्र की भौगोलिक बनावट, प्राकृतिक संसाधन, जलवायु परिवर्तन की तीव्रता और सामाजिक, आर्थिक स्थिति ने मिलकर यहां के मानव जीवन और स्थिति दोनों पर गहरा प्रभाव डाला है।

पर्वतीय प्रवास केवल आर्थिक अवसरों की खोज तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक पहचान और पीढ़ीगत संतुलन को भी प्रभावित करता है। प्रत्यक्ष रूप से रोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी ने युवाओं को प्रवास के लिए प्रेरित किया है। इससे पर्वतीय गांव की जनांकिकी संरचना असंतुलित हो गई है, जहां महिलाएं और बुजुर्ग रह गई है। अप्रत्यक्ष रूप से इस प्रवास की जड़ों में जलवायु परिवर्तन की बड़ी भूमिका है। उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में औसत तापमान में वृद्धि, वर्षा चक्र में असंतुलन, ग्लेशियर का पिघलना और प्रकृति आपदाओं (भू-स्खलन, बादल का फटना, बाढ़) की बढ़ती तीव्रता ने जीवन-यापन के संसाधनों को कमजोर किया है। पारंपरिक कृषि, बागवानी, पशुपालन जैसे व्यवसाय जलवायु परिवर्तन के कारण कमजोर और आलाभकारी होते जा रहे हैं। परिणाम स्वरुप स्थानीय युवा स्थिर आजीविका और सुरक्षा के लिए प्रवास करने को मजबूर है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से स्पष्ट है कि प्रवास केवल एक आर्थिक घटना नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक परिवर्तन है। जिसमें परिवार की संरचना, सामुदायिक संबंध और सांस्कृतिक धरोहर पर गहरा प्रभाव पड़ रहा है। प्रवास के कारण गांव में सामाजिक पूंजी और पारस्परिक सहयोग की परंपरा कमजोर हो रही है।

पर्यावरणीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो जलवायु परिवर्तन और प्रवास एक दूसरे को प्रभावित करने वाले चक्र का हिस्सा बन चुके हैं। जलवायु असुरक्षा, प्रवास को बढ़ाती है और प्रवास के कारण छूते हुए खेत, बागान, परती भूमि और उपेक्षित संसाधन स्थानीय में पारिस्थितिकी को प्रभावित करते हैं। क्योंकि जिन स्थानों पर आबादी कम रह

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 5, Issue 10, May 2025 Impact Factor: 7.67

जाती है वहां जंगलों का पुनर्जीवन होता है, जबकि अन्य जगहों पर अवस्थित भूमि उपयोग नए पर्यावरणीय संकट को जन्म देता है।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में सतत विकास तभी हो सकता है, जब सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण को एक साथ जोड़ा जाए। अंततः पर्वतीय प्रवास और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियां केवल उत्तराखंड की समस्या नहीं है, बल्कि यह विश्व के कई पर्वतीय क्षेत्रों के लिए भी प्रासंगिक है। अतः इसके समाधान के लिए स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर एकीकृत प्रयास आवश्यक है।

सुझाव:

उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों से प्रवास और जलवायु परिवर्तन की समस्या का समाधान केवल एक पक्षीय दृष्टिकोण से संभव नहीं है। इसके लिए बहु-आयामी रणनीति जिसमें सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय सभी पहलुओं को शामिल करने की आवश्यकता है।

इसके लिए कुछ मुख्य सुझाव निम्नांकित है:-

1- **स्थानीय रोजगार और आजीविका के अवसरों का सृजन किया जाए:**
   - **कृषि और बागवानी का आधुनिकीकरण:-** पारंपरिक खेती को जलवायु अनुकूलन, फसलों और आधुनिक तकनीक के साथ पुनर्जित किया जाए। ड्रिप- सिंचाई, बहू-फसली एवं जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाए।
   - **स्थानीय हस्तशिल्प और लघु उद्योग:-** ऊनी वस्त्र, लकड़ी और बांस के उत्पादन, शहद, जड़ी- बूटियां आदि को बाजार से जोड़कर युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराया जाए।
   - **पर्यटन आधारित आजीविका:-** इको-टूरिज्म, होम-स्टे और सांस्कृतिक पर्यटन को प्रोत्साहित करके युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराया जाए।
2- **शिक्षा और कौशल विकास:**
   - **कौशल प्रशिक्षण केंद्र:-** पर्वतीय युवाओं के लिए पशुपालन, बागवानी, मशरूम, कुटीर उद्योग और डिजिटल सेवाओं से जुड़ा प्रशिक्षण दिया जाए।
   - **गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा:-** गांव में अच्छे स्कूल, स्मार्ट कक्षाएं और डिजिटल शिक्षा उपलब्ध कराई जाए ताकि बच्चों को शहर की ओर पलायन न करना पड़े।
3- **बुजुर्गों की सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा:**
   - **सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का विस्तार:-** पेंशन स्वास्थ्य बीमा और देखभाल सेवाओं को सरल और सुलभ बनाया जाए।
   - **समुदाय आधारित देखभाल केंद्र:-** गांव में छोटे-छोटे डे-केयर या वृद्धि केंद्र स्थापित किए जाएं जहां बुजुर्ग समय बिता सके।
4- **जलवायु अनुकूलन विकास नीतियों:**
   - **आपदा प्रबंधन अब संरचना:-** भू-स्खलन, बाढ़ और बादल फटने जैसी घटनाओं के लिए पूर्व चेतावनी प्रणाली, सुरक्षित आश्रय स्थल और त्वरित राहत प्रणाली विकसित की जाए।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 10, May 2025
Impact Factor: 7.67

- **वन संरक्षण और वृक्षारोपण:-** पहाड़ी ढलान पर वृक्षारोपण, जल स्रोतों का संरक्षण और स्थानीय जैविक विविधता की रक्षा की जाए।
- **जल संरक्षण:-** पारंपरिक जल स्रोत जैसे नोला, धारा और गूल को पुनर्जीवित किया जाए।

5- **ग्रामीण अब संरचना का विकास:**

- **सड़क और परिवहन:-** पहाड़ी गांव तक सर्व ऋतु सड़के और सस्ती परिवहन सुविधा उपलब्ध हो ताकि ग्रामीण अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को आसानी से पूरा कर सके।
- **स्वास्थ्य सुविधाएं:-** टैली मेडिसिन, मोबाइल हेल्थ यूनिट और स्थानीय स्वास्थ्य केंद्र को सुदृढ़ किया जाए।
- **डिजिटल कनेक्टिविटी:-** इंटरनेट और मोबाइल नेटवर्क की पहुंच प्रत्येक गांव तक हो ताकि लोग डिजिटल सेवा और ऑनलाइन शिक्षा का लाभ उठा सके।

6- **सामुदायिक भागीदारी और नीति निर्माण:**

- **स्थानीय निर्णय प्रक्रिया:-** ग्राम पंचायत को अधिक अधिकार देकर विकास योजनाओं में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जाए।
- **महिला सशक्तिकरण:-** स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त किया जाए।

7- **अनुसंधान और नवाचार:**

- पर्वतीय कृषि जलवायु अनुकूलन और आपदा प्रबंधन पर शोध को प्रोत्साहन दिया जाए।
- स्थानीय ज्ञान और पारंपरिक संसाधन प्रबंधन पद्धतियों को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़ा जाए।

संदर्भ सूची:

[1]. **पलायन आयोग उत्तराखंड सरकार** 2018 **रिपोर्ट।**

[2]. **जोशी**, **रमेश चंद्र- उत्तराखंड में पलायन: कारण**, **प्रभाव और समाधान**, **गढ़वाल प्रकाशन**, **देहरादून**, 2019

[3]. **पांडे**, **विनोद कुमार- हिमालय पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन**, **शिखर पब्लिकेशन**, **नैनीताल**, 2020

[4]. **नेगी**, **टी.सी.- उत्तराखंड के पर्वतीय समाज का समाजशास्त्रीय अध्ययन**, **कुमाऊं विश्वविद्यालय**, **प्रकाशन** 2017

[5]. https://climate -diplomacy.org

[6]. https://www.gav.uk